21

पहले शोध प्रश्न, फिर शोध जन्तु और...

आम तौर पर शोधकर्ता अपनी शोध रणनीतियों पर खुलकर चर्चा करने से कतराते हैं। लेकिन इसके विपरीत राघवेन्द्र गडगकर अपनी शोध रणनीति पर खुलकर चर्चा करते हैं। उनका मानना है कि विज्ञान में नई खोज करना बहुत मुश्किल है। ऐसी खोज बहुत-बहुत मुश्किल होगी, अन्यथा यह उल्लेखनीय नई खोज ही कैसे कहलाएगी। इसका मतलब यह है कि ऐसी विशेष खोज के लिए, ढर्रानुमा काम नहीं चलेगा; आप सिर्फ कड़ी मेहनत करके सर्वोत्तम की उम्मीद के भरोसे नहीं रह सकते। आपको सोच-समझकर और सचेत ढंग से स्वयं को ऐसी स्थिति में लाना होगा कि आप नई खोज के लिए तैयार हों या कम-से-कम अपने प्रतिस्पर्धियों से आगे बने रहें।

शोधकार्य में काम की प्रकृति के अलावा शोध के विविध सोपानों पर भी गडगकर तीन किस्तों में दिए इस लेख में अपनी बेबाक राय दे रहे हैं।

51

बोलीविया का खनन उद्योग

भूगोल की पढ़ाई में पाठ्य पुस्तकों के अलावा अन्य किताबों मसलन - किसी उपन्यास, कहानी, यात्रा वृत्तान्त, डायरी, संस्मरण, लेख, भाषण आदि का भी उपयोग किया जा सकता है। बोलीविया की एक टिन खदान इलाके में काम करने वाली डोमितिला का आत्मकथ्य - लेट मी स्पीक - भी ऐसा ही विस्तृत ब्यौरा है जो लेटिन अमरीकी देश बोलीविया में खनिज संसाधनों के कुप्रबंधन, मज़दूरों के शोषण, विकसित देशों द्वारा थोपी गई शर्तों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा की जा रही लूट जैसे अनेक मुद्दों पर सहज ही ध्यान आकर्षित करता है।

पाठ्य पुस्तकों से इतर यह ब्यौरा शिक्षकों के लिए संवर्धन सामग्री तो है ही, साथ ही दुनिया के संसाधन और उससे जुड़े लोगों के जीवन को छात्रों के साथ साझा करने का मौका भी उपलब्ध करवाता है।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-22 (मूल अंक-79), जनवरी-फरवरी 2012

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

5 | **पहाड़ों में एक पुस्तकालय**
ऊषा मुकुन्दा

11 | **मिर्च जलन, पेपरमिंट ठण्डक क्यों...**
सुशील जोशी

18 | **जब परमाणु दिखाई नहीं देता...**
सवालीराम

21 | **पहले शोध प्रश्न, फिर शोध जन्तु और...**
राघवेन्द्र गडगकर

31 | **विज्ञान, कला और लेखन का संगम...**
एन. ऑस्बोर्न

41 | **नन्हे हाथ लिखना सीखने की ओर**
मोहम्मद उमर

48 | **बच्चे जब गाली दें**
माधव केलकर

51 | **बोलीविया का खनन उद्योग**
डोमितिला चुन्गारा

68 | **डॉ. मनमोहन कपूर उर्फ मन्नू**
प्रमोद उपाध्याय और शशि सक्सेना

81 | **स्कूलगाथा**
रघुनन्दन त्रिवेदी

89 | **चला जा रहा है गिंजाइयों का कारवाँ**
कालू राम शर्मा